आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2630 • उदयपुर, मंगलवार 08 मार्च, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

नारायण सेवा संस्थान का 37वां दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह

नारायण सेवा संस्थान के 37वें निःशुल्क दिव्यांग एवं निर्धन युवक–युवती सामूहिक विवाह समारोह में लियों का गुड़ा स्थित संस्थान के सेवा महातीर्थ में 21 जोड़ों ने पवित्र अग्नि को साक्षी बनाकर फेरे लिए।

मुख्य अतिथि पूर्व राज परिवार के सदस्य लक्ष्यराज सिंह जी मेवाड़ थे। संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी 'मानव', कमला देवी जी अग्रवाल, अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल, वंदना जी अग्रवाल व विशिष्ट अतिथियों संजय भाई दया जी–दक्षिणी अफ्रीका, सोहनलाल जी–एकता जी चढ्ढा व भरत जी सोलंकी–यू.एस.ए. द्वारा गणपति पूजन के साथ विवाह की पारम्परिक विधियां आरम्भ हुई। मुख्य अतिथि लक्ष्यराज सिंह जी मेवाड़ ने कहा कि सेवा भाव से किया गया कार्य हमेशा खुशी देता है। यह भारतीय समाज की शुरू से विशेषता भी रही है। मेवाड़ तो हमेशा ही इस दिशा में आदर्श रहा है। उन्होंने कहा मेवाड़ इतिहास, संस्कृति और पर्यटन की वजह से तो दुनियाभर में पहचान रखता ही है, नारायण सेवा ने इस पहचान को और व्यापकता दी है। कैलाश जी 'मानव' ने कहा कि जिन दिव्यांग भाई–बहिनों ने अपनी निःशक्तता को दुर्भाग्य मानते हुए अपनी गृहस्थी बसने की कभी कल्पना भी न की होगी, आज समाज के सहयोग और भव्यता से उनकी यह साध पूरी हो रही है।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने कहा कि सपने देखना किसे अच्छा नहीं लगता और जब कोई अकल्पनीय सपना साकार हो उठता है तो उसकी खुशी को बयां करना भी आसान नहीं होता। ऐसे ही पलों को समेटे इस विशाल प्रांगण में 21 दिव्यांग जोड़ों ने जिन्दगी की नई शुरूआत की है। ये जोड़े राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, उत्तर प्रदेश सहित विभिन्न राज्यों के हैं। उन्होंने बताया कि पिछले 36 विवाहों में 2130 जोड़े अपना घर–संसार बसाकर खुश हैं। इन जोड़ों में कोई पांव से तो कोई हाथ से दिव्यांग है। किसी जोड़े में एक विकलांग है तो साथी सकलांग है। ऐसा जोड़ा भी है जो नेत्रहीन है।

मेहंदी रस्म के दौरान विभिन्न राज्यों से आई महिला अतिथियों ने ढोलक की थाप पर मेहंदी के परम्परागत गीत–नृत्यों की मनोहारी प्रस्तुतियां दी। वंदना जी अग्रवाल व पलक जी अग्रवाल की टीम ने जब स्नेह से मेहंदी लगाई तो ये पल दुल्हनों के लिए अविस्मरणीय हो गया। विवाह समारोह के दौरान प्रातः 9.15 बजे अग्रसेन चौराहे से संस्थान परिसर तक दूल्हा–दुल्हन की बिन्दोली निकाली गई। जिसमें बैण्ड बाजों की धुन पर विभिन्न प्रान्तों से आए अतिथियों ने जमकर ठुमके लगाए। बाद में सभी दूल्हों ने क्रम से तोरण की रस्म अदा की। इसके बाद हाइड्रोलिक स्टेज पर गुलाब पंखुड़ियों की बौछार के बीच नव युगलों ने परस्पर वरमाला पहनाई। इसके पश्चात 21 वेदी–कुण्डों पर उपस्थित आचार्यों ने वैदिक विधि से पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न करवाया। विदाई की वेला में दुल्हनें डोली में बेठकर साजन के घर जाने के लिए संस्थान परिसर से बाहर आई जहां दूल्हे व उनके परिवार तथा अन्य अतिथि मौजूद थे। इस दौरान सभी की आंखे नम हो उठी। संस्थान के वाहनों में गृहस्थी के सामान व अतिथियों द्वारा प्रदत्त उपहारों के साथ नव दम्पती को खुशी–खुशी अपने–अपने घरों के लिये विदा किया गया। समारोह का संस्कार चैनल से सीधा प्रसारण किया गया। मंच संचालन महिम जी जैन ने किया।

रागिनी में लौटा आत्मविश्वास

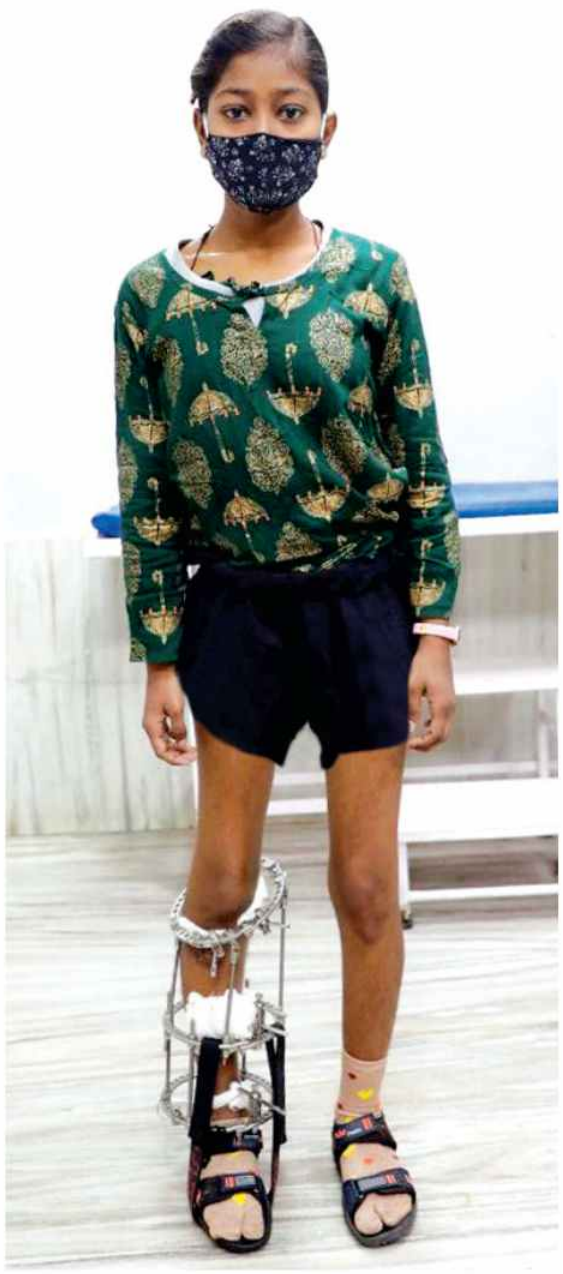

बिहार निवासी रागिनी के परिवार में माता–पिता सहित सात सदस्य हैं। वह नौंवी कक्षा में अध्ययनरत है। पिता कृष्णावतार फलों का ठेला लगाते हैं और बेमुश्किल आठ–नौ हजार रू. कमाते हैं। रागिनी जन्म के समय सामान्य बच्चों की तरह ही थी। जब वह करीब 13–14 की होगी तब उसके पांव में दर्द और टेढ़ेपन की समस्या आई। गरीब पिता ने आस पास के हॉस्पीटल में इलाज कराने की कोशिश भी की पर फायदा नहीं हुआ। उम्र के साथ रागिनी और उसके परिवार की दिक्कतें भी बढ़ती गई। उसका आत्म विश्वास भी कमजोर पड़ने लगा। पढ़ाई छोड़ने की नौबत तक आ गई। तभी उन्हें नारायण सेवा संस्थान की जानकारी मिली। पिता मालुमात कर बेटी को उदयपुर लेकर आए। संस्थान के वरिश्ठ ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. अंकित चौहान से उसका परीक्षण किया। उन्होंने बताया कि इलीजरॉव पद्धति से रागिनी का ऑपरेशन कर दिव्यांगता से छुटकारा दिला देंगे।

डॉक्टर की बातों पर पिता–पुत्री को एकाएक विश्वास नहीं हो रहा था। तब संस्थान टीम ने उनकी समझाईश की और रागिनी का सफल ऑपरेशन सम्पन्न हुआ। 3 माह तक डॉक्टर्स टीम की विशेश देखरेख में रागिनी को संस्थान में रखा गया। अब वह बिन सहारे चलती है.... बिल्कुल एक सकलांग की तरह। यह देख पूरा परिवार बेहद खुश है। रागिनी कहती है कि मैंने तो जीने की उम्मीद ही छोड़ दी थी लेकिन अब मुझे विश्वास है कि मेरा जीवन संस्थान की बदौलत खुशमय होगा।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

भरत जी के मन में बार–बार ये है और वशिष्ठ जी ने भी ये कहा– आपके पिताजी आपको राज्य देकर गये हैं। ये राज सिहासन खाली नहीं रहना चाहिये। आइये शुभ मूर्हूत में बिराजिये। भरत जी रो पड़े, भरत जी ने हाथ जोडकर कहा– गुरुदेव, आप तो हमारे परमात्मा के समान है। मैंरे पिताजी भी नहीं रहे। आप तो गुरु भी हो, पिता भी हो। आपके वचन सिरमाथे चढ़ाना चाहिये। लेकिन क्या करूँ मेरे से रहा नहीं जाता। मैं तो प्रभु राम जी को मनाने के लिये जाना चाहता हुँ। चित्रकूट जाना चाहता हुँ, आप आज्ञा प्रदान कीजिये। शत्रुध्न जी ने कहा– बहुत अच्छा विचार है भैया। अब रामजी को, सीता जी को, लक्ष्मण जी को मना के ले आऐंगे और श्रृंगवेरपुर से जब जा रहे थे पहले निशादराज को शंका हो गयी। ये शंका, ये मन में अविश्वास होना। सोचा –अरे ! भरत जी तो देखो, इतनी प्रजा भी आ रही है, इतने घोड़े भी आ रहे है, रथ भी आ रहे है। रामजी को तो एक बार कपट करके राज्य भरत को मिले। राम को वनवास मिले, उनको वनवास दे दिया। अब चित्रकूट में रह रहे है। फिर भी भरत उन पर आक्रमण करने के लिये जा रहे है। नावो को बांध दो। कोई नाव को खुली ना रखें। भरत जी को गंगापार नहीं उतरने देंगे। उस समय एक सयाने ने कहा–

बिना विचारे जो करे,
सो पाछे पछताय।
काम बिगाड़े आपणो,
जग में होय हसांय।।

एक सयाने ने कहा– पहले कुछ दूतों को भेज दीजिये निशादराज जी। मुझे लगता है भरत जी मनाने जा रहें हैं। और जो दूतों को भेजा, भरत जी विह्वल हो गये। आपने मेरे रामजी को देखा है क्या ? आपने मेरे रामजी को इधर से जाते हुए देखा है क्या ? टपटप आँसूं टपक पडे। निशादराज ने गले लगा लिया। भरतजी ने कहा –भाई धन्य हो निशादराज। आपने रामजी की सेवा की है। धन्य है निशादराज, इसी वृक्ष के नीचे रामजी सोये है। लक्ष्मणजी के साथ आपका लक्ष्मण– गीता का संवाद हुआ हैं, सत्संग हुआ हैं। आगे बढते हैं।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल नि:शुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन
एवं कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
दिनांक व स्थान

13 मार्च 2022 : बजरंग आश्रम, हॉसी, हरियाणा

13 मार्च 2022 : चन्द्रपुर

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

सम्पादकीय

परिवार की धुरी क्या है? इस संबंध में कई विचार हो सकते हैं। परिवार के लिये धन आवश्यक है। परिवार के लिये सदस्य आवश्यक है। घर आवश्यक है, रिश्तेदारी आवश्यक है। उपर्युक्त सभी का अपना महत्व है किन्तु परिवार के लिये जो अति आवश्यक है वह है प्रेम। प्रेम वह धुरी है जिस पर परिवार रूपी चक्र टिका रहता है। धन है पर प्रेम नहीं, घर और अन्य संसाधन है पर प्रेम नहीं।, सदस्य भी बहुत हैं पर प्रेम नहीं तो फिर परिवार की सार्थकता क्या होगी?

परिवार में और सब न्यूनतायें हों तो अभाव में भी चला जा सकता है। कम संसाधनों से भी निर्वाह हो सकता है। किन्तु यदि प्रेम नहीं है तो परिवार का जुड़ा रहना असंभव है। प्रेम है तो सहिष्णुता, आपसी चिन्ता और दूसरों के लिये जीने का भाव निरंतर बहता रहेगा। इनके भाव में संबंधों का प्रवाह अवरुद्ध होकर परिवार में टूटन आना अवश्यंभावी है। इसलिये और कुछ हो न हो प्रेम तो अति आवश्यक घटक है।

कुछ काव्यमय

प्रेम परस्पर संयोजक है,
प्रेम धरोहर, प्रेम ही धन है।
प्रेम बिना जीने को कोई
कैसे कर सकता जीवन है ?
प्रेम परस्पर चिंता करता
प्रेम हमें उत्सर्ग सिखाता।
प्रेम प्रेरणा देता रहता
प्रेम सभी को राह दिखाता।

अपनों से अपनी बात

राजा की सीख

एक राज्य का राजा बहुत दयालु था। वह प्रतिदिन सुबह टहलने जाता था। उसे द्वार पर जो भी पहला याचक मिलता था वह उसे उसकी मनचाही वस्तु दान में देता था। यह सुनकर एक लोभी व्यक्ति एक दिन सुबह होते ही राजा के द्वार पर जाकर खड़ा हो गया। जैसे ही राजा ने द्वार पर याचक को देखा तो पूछा हे– बंधुवर! आपको क्या चाहिए? लालची व्यक्ति ने नाटकीय ढ़ंग से कहा राजन, आप जो भी देंगे वह मुझे स्वीकार होगा। तब राजा ने कहा– नहीं आप कुछ बताएंगे तभी मैं दे पाऊंगा।

वह विचार में पड़ गया। उसने राजा से कहा– मुझे सोचने का समय दीजिये। मैं कुछ विचार कर बाद में

माग लूगा। राजा ने सहमति प्रदान कर दी। उसने मन ही मन सोचा कि मैं एक याचक हूँ और वह एक राजा । क्यों न पूरा राज– पाट ही मांग लूँ। जिससे फिर जीवन में कभी मांगने की जरूरत ही ना पड़े। राजा जब टहलकर वापस आए और व्यक्ति से पूछा तो उसने शीघ्रता से पूरा पूरा राज– पाट मांग लिया। राजा ने उससे कहा– हे प्रियवर! आपने तो मेरी पीड़ा दूर कर दी। आपने मुझे भार– हीन बना दिया। इस राजकाज की वजह से न तो मैं ढ़ंग से खा पाता हूँ और न ही सो पाता हूँ। इसने तो मेरा संपूर्ण सुख– चैन ही छिन लिया। इसके कारण मुझे भगवान की भक्ति का भी समय नहीं मिलता है। जिसने मुझे मानव देह के रूप में जन्म लेने का अवसर दिया। हर क्षण मुझे प्रजा की चिंता को आपने पलभर में दूर कर दिया।

मैं आपका बहुत आभारी हूँ और रहूँगा। यह सुनकर लोभी की आँखे खुल गई। उसे राजा की महानता का अनुभव हुआ तथा उसे अपनी ही सोच पर पछतावा हुआ कि राजा होते हुए भी इसे राजपाट का कोई मोह नहीं है जबकि मैं मोह– माया में पड़ गया। वह राजा को प्रणाम कर वहां से चला गया।

– कैलाश 'मानव'

जीतना सीखो

आत्मसंयमी और संघर्षशील व्यक्ति वह होता है जो हर कार्य करने के लिए सदैव तत्पर रहता है। वह जीवन में आने वाले खतरों से कभी नहीं डरता है। अवसर कितने भी प्रतिकूल क्यों न हों, परिस्थितियाँ कितनी भी खतरनाक क्यों न हों, वह आत्म–संयम से मुसीबतों का सामना करते हुए विजयश्री प्राप्त कर ही लेता है।

नेपोलियन बोनापार्ट, जिन्होंने अनेक लड़ाइयाँ लड़ीं और जीतीं। अत्यंत निर्भीक, साहसी और संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी थे। एक बार वे अपनी विशाल सेना लेकर निकल पड़े एल्पस

पर्वत श्रृंखला को पार करने। वे जब अपनी सेना को आगे बढ़ने का आदेश देते हुए उसका नेतृत्व कर रहे थे तो राह में उन्हें एक बूढ़ी औरत मिलीं उस बूढ़ी औरत ने नेपोलियन से पूछा– कहाँ जा रहे हो बेटा?

इस प्रश्न पर नेपोलियन ने बहादुरी से सीना चौड़ा करते हुए उत्तर दिया – इस एल्पस पर्वत को पार करने। नेपोलियन का उत्तर सुनकर बूढ़ी औरत मन ही मन हँसने लगी और बोली –इस विशाल एल्पस पर्वत को पार करने जा रहे हो, जिसे आज तक कोई पार नहीं कर पाया और जिस–जिस ने इसे पार करने की कोशिश की वे मारे गए। कोई भी नहीं बच पाया। इस पर्वत को पार कर पाना मुश्किल ही नहीं, असंभव है। अपने इरादे को त्याग दो और अगर अपनी और अपने सैनिकों की जान की सलामती चाहते हो तो यहीं से लौट जाओ। नेपोलियन ने उस बूढ़ी औरत की बात को सुनकर ठहाके लगाते हुए अपने गले से एक माला निकाली और बूढ़ी औरत को वह माला देते हुए कहा– हे माँ! तुम्हारा धन्यवाद, तुमने मुझे निराश नहीं किया है, अपितु तुमने तो मुझे और अधिक प्रेरित कर दिया है एवं मेरे मन में एक नई ऊर्जा का संचार कर दिया है। मैं अवश्य ही इस पर्वत को पार करके तुम्हारे पास वापस आऊँगा और उस समय तुम भी अन्य लोगों के साथ मेरी जय–जयकार कर रही होगी। नेपोलियन की वह विशाल पर्वत पार कर लेने की बात पर बूढ़ी औरत ने प्रत्युत्तर में कहा– मैंने जिसे भी इस पर्वत के बारे में बताते हुए उसे लौट जाने को कहा, वे सभी मेरी बात सुनकर वापस लौट गए। किसी ने भी पर्वत पर चढ़ाई करने की कोशिश नहीं की। तुम अकेले ऐसे व्यक्ति हो, जिसने इतने अदम्य साहस का परिचय दिया है। तुम्हें यह पर्वत तो क्या, दुनिया का कोई भी पर्वत नहीं रोक पाएगा। तुम अवश्य ही जीतोगे, क्योंकि तुम्हारे इरादे चट्टान की तरह मजबूत हैं। जो जीवन में करो या मरो का सिद्धान्त अपनाते हैं और खतरों से खेलने की इच्छा रखते हैं, वे कभी असफल नहीं होते। जो अपने जीवन में विकल्पों का त्याग कर देते हैं और एकमात्र लक्ष्य की तरफ ही ध्यान लगाते हैं, जीत उनकी मुट्ठी में होती है।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

मित्र करोड़पति था तो भी अपनी पुत्री का विवाह अत्यन्त सादगी के साथ सिर्फ 5 हजार रु. के व्यय में शांतिकुंज हरिद्वार में सम्पन्न किया। कैलाश इनसे मिलते ही प्रभावित हो गया और शांतिकुंज के प्रति उसकी आस्था और प्रबल हो गई। अब उसके मन में शांतिकुंज जाने की ललक प्रबल हो गई।

बचपन में कैलाश माता–पिता के साथ ऋषिकेश गया था। अचानक उसकी स्मृतियां उसके मस्तिष्क पटल पर उभर आई। वह बहुत छोटा था, फिर भी इतना उसे याद था कि वहां स्वर्गाश्रम में जाते थे। उपर की मंजिल पर ठहरते थे और माताजी एक रस्सी से बाल्टी नीचे लटका देती थी, सामने मां गंगा के दर्शन होते थे, माताजी को कोई भूखा जाते नजर आता तो वे उसे आवाज देकर रोकती और बाल्टी में फुल्के, फल वगैरह रख कर नीचे उतार देती। वो वहीं बैठकर खाते तो माताजी बहुत प्रसन्न हो जाती थी।

कलकत्ता में ट्रेनिंग पूरी करने के बाद कैलाश ने एक माह की छुट्टी ले शांतिकुंज जाने का निश्चय किया। पोस्टिंग अभी हुई नहीं थी इसलिये उसे छुट्टी भी आसानी से मिल गई। हरिद्वार में शांतिकुंज पहुंचा तो उसे पता लगा कि वहां धर्म तंत्र से लोक शिक्षण विषय पर महीने भर का प्रशिक्षण चल रहा है, उसने यह प्रशिक्षण प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की तो उसे अनुमति मिल गई। उसे एक कमरा दे दिया गया।

प्रशिक्षण के दौरान सभी को आश्रम में सेवा कार्य के संकल्प लेने पड़ते थे। कैलाश ने प्रतिदिन 5 शौचालय साफ करने का संकल्प लिया। वह सुबह 3 बजे ही उठ जाता और सफाई में लग जाता। शौचालय व स्नानाघर एक साथ ही थे। तब कमोड तो होते नहीं थे, छिटकमा शौचालय थे। घन्टे भर में वह कार्य निपटा लेता था। उसके साथ अन्य प्रशिक्षु भी यह कार्य करते थे।

स्नान–ध्यान करने के बाद यज्ञ में बैठ जाते। 8 बजे अल्पाहार शुरू हो जाता। ठीक 10 बजे कार्यक्रम शुरू हो जाता जो सायं 5 बजे तक चलता। बीच में घन्टे भर भोजन का विराम होता। कैलाश अत्यन्त मनोयोग से प्रशिक्षण व परिचर्चाओं में भाग लेता। उसे धर्म के वैज्ञानिक स्वरूप, कर्म काण्ड, इसकी क्रियाओं की व्याख्या आदि में बहुत कुछ जानने को मिला। **अंश - 027**

व्यक्ति निर्माण का उपक्रम

कुछ यात्री नौका से उतरे। उन्हें गांव पहुंचना था। एक व्यक्ति से पूछा– 'क्या सूरज के अस्त होते होते हम गांव में पहुंच जाएंगे?' उसने कहा– 'धीरे चलोगे तो पहुंच जाओगे, तेज चलोगे तो नहीं पहुंच पाओगे, बिल्कुल उल्टी बात थी। कुछ लोग तेज चलने लगे। भूमि ऊबड़–खाबड़ और पथरीली थी। वे एक एक कर गिर गिए। चोट लगी। वहीं रूक गए।

आज गति की इतनी तीव्रता हो गई है कि आदमी जल्दी पहुंचे, लेकिन कभी–कभी ऐसा होता है कि जल्दी पहुंचने वाला आदमी बीच में ही लड़खड़ा जाता है। जैसे–जैसे टेक्नोलोजी का विकास हो रहा है, वैसे–वैसे आदमी अनुभव कर रहा है कि उसे पीछे मुड़कर देखने की जरूरत हो गई है। वह समझता है कि आदमी बहुत आगे बढकर भी बहुत पिछड़ गया है। आज आदमी पिछड़ गया और 'रोबोट' आगे बढ़ गया, कंप्यूटर हावी हो गया। दूसरे शब्दों में आदमी पीछे रह गया और यंत्र आगे आ गया। यह गति की तीव्रता का परिणाम है।

कोलेस्ट्रॉल घटाती है अर्जुन की छाल

प्रकृति से आयुर्वेद में हृदय के लिए अर्जुन की छाल समान बताया है। इसकी छाल से बने चूर्ण को हृदय रोग, कोलेस्ट्रॉल, हाई ब्लड़ प्रेशर, अत्यधिक रक्तस्राव सहित कई रोगों में काफी उपयोगी माना गया है।

अर्जुन की छाल अंदर से लाल रंग का होती है। पंसारी की दुकान पर आसानी से मिलती है। हृदय ही धकड़न नियमित व व्यवस्थित रखने के लिए अर्जुन की छाल का क्षीर का व चाय बनाकर देते हैं। बीमारी के अनुसार इसकी मात्रा तय होती है। मात्रा ज्याादा होने पर दस्त शुरू हो सकते है। व्यक्ति की पाचन शक्ति के अनुसार इसकी मात्रा तय होती है। चिकित्सक की सलाह के बिना न लें।

कॉलेस्ट्रॉल में कमी –

इसके नियमित प्रयोग से हाई ब्लड प्रेशर, दिल के दौरे, नसों में जम फैट को हटाता है। इससे कॉलेस्ट्रॉल में कमी (अतिरोस्किलरेटिक चेंजेज) आती है। अर्जुन की चाय के नियमित प्रयोग से क्षीर पाक की तरह फायदा मिलता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

दिनांक 15 अप्रैल 20 को किया था। उत्पाद व्यय, उत्पाद व्यय हर कोशिका अपना उत्पाद व्यय करती है, हर कोशिका ऑक्सीजन ले रही है, हर कोशिका कार्बनडाई ऑक्साइड छोड़ रही है। कोशिका से ऊत्तक बने, ऊत्तक से अंग बने, अंग से सिस्टम बने। ठाकुर जी जो हमारे अभी बोले जा रहे हैं, वो आपने करवा दिये।

कात्याफला दिनांक– 03.04.1988, रोगी सेवा 540, अन्य सेवा 1325

वाडाफला दि.– 10.04.1988 रोगी सेवा– 315, अन्य सेवा– 1200

वाडाफला दि.– 10.04.1988 रोगी सेवा 35, अन्य सेवा 1180

कालीवास दि. 17.04.1988 रोगी सेवा 300, अन्य सेवा 1223

पालियाखेड़ा दि. 24.04.1988 रोगी सेवा 413, अन्य सेवा 1650

ओड़ा दि. 01.05.1988 रोगी सेवा 541, अन्य सेवा 1823

पानरवा दि. 08.05.1988 रोगी सेवा 270, अन्य सेवा 1183

बहुत अच्छा रसिक भाई किसी आकर्षण से खिंचे चले आये और अफ्रीका में जब नारायण सेवा की टोली–टीम गई सेवादूत गये– साधक गये, तो भी उस समय रसिक भाई ने बहुत मदद की। बन्धु जब अतिथि गृह का उद्घाटन हुआ, उस समय कई महानुभाव पधारे। उसमें तीन महानुभावों का उल्लेख मैं संक्षिप्त रूप में करना चाहूँगा।

आपश्री ने सुना होगा संगीत के जो भी उनमें एक महानुभाव अन्तरिक्ष से हमें अशीर्वाद दे रहे होंगे और दूसरे महानुभाव जो हमें दर्शन देने कृपा करके पधारे होंगे। उस समय भार्गव साहब दिल्ली से, जो कहते हैं बाबूजी मुझे देने हैं। बहुतों का सहयोग हुआ, बिरला जी का हुआ और उस समय नागपुर वाले रामस्वरूप जी सारड़ा का बहुत बड़ा आभारी हूँ। उन्होंने सुदामा भोजनशाला बनायी एवं रमेश भाई ओझा उनके पुज्य गुरुदेव जी मेरी बहुत श्रद्धा है। परम् पूज्य रमेश भाई ओझा साहब रामायण के वक्ता हैं।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 380 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023